



Study AV Kand 6 Hindi

### अथर्ववेद 6.62.2

वैश्वानरीं सूनृतामा रभध्वं यस्या आशास्तन्वो वीतपृष्ठाः ।  
तया गृणन्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।2।।

(वैश्वानरीम्) सभी मनुष्यों का कल्याण करने वाला, समूची मानवता के स्वामी द्वारा दिया गया (सूनृताम्) सर्वोत्तम और सत्य वाणियों के लिए (आरभध्वम्) आप प्रारम्भ करते हो (यस्याः) जिसकी (आशाः) दिशाएँ (तन्वः) सर्वत्र फैली हुई (वीतपृष्ठाः) भिन्न-भिन्न और गहरा ज्ञान (तया) उससे (गृणन्तः) चर्चा करते हुए, परमात्मा का महिमागान करते हुए (सधमादेषु) समान रूप से हमारे स्थान पर (वयम्) हम (स्याम) होवें (पतयः) स्वामी और संरक्षक (रयीणाम्) गौरवशाली सम्पदा के।

नोट:- अथर्ववेद 6.62.2 तथा यजुर्वेद 19.44 के कुछ भाग समान हैं।

व्याख्या:-

दिव्य ज्ञान हमें क्या उपलब्ध कराता है?

आप सर्वोत्तम और सत्य वाणियों को प्रारम्भ करते हो जो सभी मनुष्यों का कल्याण करती हैं और जिसे समूची मानवता के स्वामी ने प्रदान किया है। यह सभी दिशाओं में व्याप्त, विभिन्नताओं से भरा हुआ गहरा ज्ञान है। उसके साथ, उसकी चर्चा करते हुए और परमात्मा का महिमागान करते हुए, हम समान रूप से अपने स्थान पर गौरवशाली सम्पदा के स्वामी और संरक्षक हो जाते हैं।

जीवन में सार्थकता:-

दिव्य ज्ञान के क्या लक्षण हैं?

परमात्मा का दिव्य ज्ञान मानवता के पूर्ण कल्याण के लिए हर प्रकार के ज्ञान को समाहित करता है। यह पवित्र और सकारात्मक ज्ञान है जिसमें जरा भी नकारात्मकता और विनाश का मार्ग नहीं है। यह ज्ञान यज्ञ के लिए है अर्थात् धरती पर रहने वाले सभी जीवों के कल्याण के लिए।

यह दिव्य है, क्योंकि यह हमें दिव्य शक्तियों और दिव्य लोगों और अन्ततः परमात्मा के साथ जोड़ता है।

यह दिव्य है क्योंकि यह वायुमण्डल में व्याप्त है और सभी जिज्ञासुओं को बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध होता है।

यह दिव्य है क्योंकि यह परमात्मा द्वारा दिया गया है जो सभी मनुष्यों के कल्याण के लिए स्वयं ही यह पवित्र ज्ञान है। इसीलिए उसे वैश्वानर कहा जाता है। इस ज्ञान को प्राप्त करने की एक ही शर्त है – पवित्रता, क्योंकि शुद्ध होने के नाते यह केवल पवित्र लोगों के पास ही आता है।

सूक्ति :- 1. (वैश्वानरीम् सूनृताम् आरभध्वम् – अथर्ववेद 6.62.2) आप सर्वोत्तम और सत्य वाणियों को प्रारम्भ करते हो जो सभी मनुष्यों का कल्याण करती हैं और जिसे समूची मानवता के स्वामी ने प्रदान किया है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



2. (वयम् स्याम पतयः रयीणाम् — अथर्ववेद 6.62.2, यजुर्वेद 19.44 तथा ऋग्वेद 10.121.10) हम गौरवशाली सम्पदा के स्वामी और संरक्षक होंगे।

### अथर्ववेद 6.64.1

सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम्।  
देवा भागं यथा पूर्वं संजानाना उपासते॥१॥

(सम्) समान रूप से, एकता के साथ (जानीध्वम्) ज्ञानी (सम्) समान रूप से, एकता के साथ (पृच्यध्वम्) सम्बद्ध होता है (कार्य के लिए) (सम्) समान रूप से, एकता के साथ (वः) आपके (मनांसि) मन (जानताम्) ज्ञान प्राप्त करते हैं, विचारों को विकसित करते हैं (देवाः) दिव्य लोग (भागम्) भूमिका, हिस्सा (यथा) जैसे कि (पूर्वं) पूर्वकाल में (संजानाना) समान रूप से, एकता के साथ जानना, विचार करना (उपासते) पूजा करते थे, निकट बैठते थे, इकट्ठे काम करते थे।

नोटः— अथर्ववेद 6.64.1 तथा ऋग्वेद 10.191.2 प्रथम पंक्ति के प्रथम पद की भिन्नता के साथ शेष समान हैं।

व्याख्याः—

समाज में समानता और एकता का निर्माण कैसे किया जाये?

- ❖ आप सब समान रूप से ज्ञानी होते हुए एक बनो।
  - ❖ आप सब समान रूप से सम्बद्ध रहो (कार्य के लिए), अपने व्यक्तिगत हितों के लिए टकराओ मत।
  - ❖ तुम्हारे मन ज्ञान प्राप्ति के लिए समान रहें।
- इस प्रकार पूर्वकाल के दिव्य लोग अपनी भूमिका का निर्वहन करते थे और हर वस्तु में सहभागिता करते थे। वे समानरूप से और एकता पूर्वक जानते हुए और सोचते हुए इकट्ठे बैठते थे, पूजा करते थे और सभी कार्य करते थे।

जीवन में सार्थकताः—

आधुनिक संविधानों के निर्माताओं की दूरदृष्टि क्या थी?

आधुनिक समाज समानता और एकता को लागू करने में असफल क्यों होते हैं?

पूर्वकाल के लोग प्राचीन ऋषि मुनि थे और सामाजिक एकता की भूमिका निभाने वाले आदर्श पुरुष थे। उन्होंने समाज में समानता और एकता का निर्माण करने में अपनी-अपनी भूमिका का निर्वहन किया। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने भी समानता और एकता के महत्त्व को प्रकट किया। ऐसा ही अन्य अनेकों देशों में भी किया गया। किन्तु भ्रष्ट राजनीतिक प्रक्रियाओं और यहाँ तक कि कार्यकारिणी के अधिकारी भी समाज के इस मूल चरित्र को समझने में और उसे लागू करने में असफल रहे। अब भी समानता और एकता के इन मूल सामाजिक लक्षणों को स्थापित करना और लागू करना बहुत कठिन नहीं है। वर्तमान पीढ़ी को उन सन्तों और महात्माओं के गौरवशाली इतिहास का परिचय देकर समानता और एकता के महत्त्व के प्रति चेतन और जागृत किया जा सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सबके लिए शिक्षा समान होनी चाहिए और सबके लिए कानून भी समान होना चाहिए। सबके लिए प्रगति के अवसर भी समान होने चाहिए, निःसंदेह वंचित लोगों को उनकी वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार विशेष सुविधाएँ दी जा सकती हैं।

### अथर्ववेद 6.64.2

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं व्रतं सह चित्तमेषाम् ।  
समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभिसंविशध्वम् ॥2॥

(समानः) सबके लिए एक और समान (मन्त्रः) मार्गदर्शन देने के नियम, निर्देश, सुझाव (समितिः) सभा, संगठन (समानः) सबके लिए एक और समान (समानम्) एक और समान बनो (व्रतम्) व्रत, संकल्प (सह) एक साथ (चित्तम्) बुद्धि (एषाम्) इन सब लोगों के (समानेन) समानता और एकता के साथ (वः) आपके लिए (हविषा) आहुतियाँ (जुहोमि) जोड़ता हूँ (समानम्) एक और समान बनो (चेतः) बुद्धि, चेतना (अभि सम् विशध्वम्) समान और एकता के सूत्र की तरफ बढ़ते हैं और प्रवेश करते हैं।

नोटः— यह मन्त्र अथर्ववेद 6.64.2 और ऋग्वेद 10.191.3 में कुछ परिवर्तनों के साथ समान है।

व्याख्याः—

समानता पर वैदिक निर्देश क्या है?

- सबके लिए मार्गदर्शन देने वाले नियम, निर्देश और सुझाव एक और समान हों।
  - सबके लिए सभाएँ और संगठन एक और समान हों।
  - सबके मन और बुद्धियाँ एक और समान हों तथा एकत्रित होकर रहें।
- मैं सबके कल्याण के लिए तुम्हें समान आहुतियों से संयुक्त करता हूँ। समान और एकीकृत बुद्धि और चेतना की तरफ आगे बढ़ो और उसमें प्रवेश करो।

जीवन में सार्थकताः—

आधुनिक सरकारें समानता को अक्षरशः और आत्मिक रूप से लागू करने में असफल क्यों होती हैं?

समानता पर वेद की क्या अवधारणा है?

सरकार की कार्य प्रणाली यज्ञ कैसे बन सकती है?

प्रत्येक माता—पिता, वृद्धजनों, उच्चाधिकारियों, नेताओं और प्रत्येक सरकार का यह दायित्व होता है कि अपने अधीनस्थ सभी नागरिकों के लिए एक समान नियमों को लागू करें।

समानता से समानता पैदा होती है, जबकि असमानता से भिन्न—भिन्न माने जाने वाले वर्गों के बीच सौहार्द समाप्त होता है।

एक राष्ट्र के लोगों को एक समान कानूनों से मार्ग दर्शित किया जाना चाहिए और इन कानूनों को बिना किसी भेदभाव के लागू किया जाना चाहिए। समूचे विश्व में अधिकतर संविधान और कानून वर्गों, जातियों, रंग, नश्ल और लिंग आदि के आधार पर असमानता को रोकने की गारंटी देते हैं। अदालतें भी समानता को मूल संवैधानिक निर्देश के रूप में घोषित करती हैं। वास्तव में यह एक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



वैदिक निर्देश भी है। परमात्मा की दृष्टि में, चींटी से लेकर हाथी तक, सभी समान हैं। सभी जीवों को जीवन की मूल शक्ति के रूप में एक समान शक्ति प्रदान की जाती है। सरकारों को भी अपनी भिन्न-भिन्न योजनाओं और नीतियों के लाभ बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों तक पहुँचाने के लिए अपने सभी कार्य यज्ञ की तरह करने चाहिए। जिस प्रकार अग्नि यज्ञ अपने शुद्ध और शुद्ध करने वाले धुएँ को अपने वायु मण्डल में फैलाते हुए भेदभाव नहीं करता, उसी प्रकार सरकार के सभी कार्य भी सभी नागरिकों के लिए बिना भेदभाव के हों अर्थात् सभी नागरिकों के लिए समान लाभकारी। प्रत्येक सरकार के मुखिया को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके सभी विभाग योजनाओं और कार्यक्रमों को यज्ञ की तरह लागू करें।

### अथर्ववेद 6.64.3

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।  
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।3।।

(समानी) समान हों (वः) आपकी (आकूतिः) चर्चाएँ, संकल्प (समाना) समान हों (हृदयानि) हृदय (वः) आपके (समानम्) समान (अस्तु) हों (वः) आपके (मनः) मन (यथा) जिससे (वः) आपके (सु सह असति) एक समान जीवन का आनन्द ले सको (समान शांति के साथ और इकट्ठे प्रगति करते हुए)।

नोट:- यह मन्त्र अथर्ववेद 6.64.3 तथा ऋग्वेद 10.191.4 में समान रूप से आया है।

व्याख्या:-

हम सब समान जीवन का आनन्द कैसे ले सकते हैं?

- अपनी चर्चाएँ और संकल्प समान होने दो।
- अपने हृदयों, भावों और संवेदनाओं को समान बनाओ।
- अपने मन और इच्छा शक्तियों को भी समान बनाओ।

जिससे आप एक समान जीवन का आनन्द ले सको।

जीवन में सार्थकता:-

आज के युग में एक आध्यात्मिक समाज किस प्रकार सुनिश्चित किया जा सकता है?

यह मन्त्र सुसहासति पर जोर देता है अर्थात् समान शांति और सबके लिए समान प्रगति सुनिश्चित कराते हुए एक समान जीवन। भारत के प्रधानमंत्री रहते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी शासन पद्धति का एक प्रसिद्ध नारा व्यक्त किया – 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास।'।

केवल यही समान जीवन, समान शांति, समान प्रयास और प्रगति का समान हिस्सा किसी समाज और राष्ट्र को तेज गति से पूर्ण विकास की ओर ले जा सकता है। शांति को सामान्यतः एक आध्यात्मिक

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





फल माना जाता है। सरकारें और समाज सबके लिए समानता और एकता को लागू करके निश्चित रूप से सबके लिए बाहरी शांति सुनिश्चित कर सकती हैं। यदि सरकारी कानून अलग-अलग वर्गों के लिए अलग-अलग होंगे तो इससे कुछ लोगों को सम्मान महसूस होता है और कुछ लोगों में असंतोष उत्पन्न होता है। अतः प्रत्येक सरकार और समाज का यह दायित्व है कि वह सब लोगों को एक समान आदर और श्रद्धा के साथ मार्गदर्शन दें और नियंत्रण करें। केवल एक आध्यात्मिक समाज ही एक समान जीवन पद्धति का स्थान बन सकता है। जिसमें सबके लिए समान शांति और समान प्रगति के अवसर प्राप्त हों। सबके लिए शिक्षा, कानून और अवसर समान होने चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति सरकार के नियंत्रण और निर्देशन में रहे। यदि कानून सबके लिए समान हैं तो कोई भी कानून से ऊपर नहीं होता।

**This file is incomplete/under construction**

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171